बीज मन्त्र

यदि इन बीज मंत्रों का मन्त्र विधान सहित नित्य जाप किया जाये तो, निश्चित ही लाभ की प्राप्ति होती है और अभिष्ट कार्य सिद्ध होते है।

"ॐ" बीज मन्त्र

ओ३म् (ॐ) या ओंकार को प्रणव कहा जाता है, ओउ्म तीन शब्द 'अ' 'उ' 'म' से मिलकर बना है, जो त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश तथा त्रिलोक भूर्भुव: स्व: भूलोक भुव: लोक तथा स्वर्ग लोक का प्रतीक है।

ओ३म् को पद्मासन में बैठ कर जप करने से मन को शांति तथा एकाग्रता की प्राप्ति होती है। इस बारे में वैज्ञानिकों तथा ज्योतिषियों को कहना है कि ओउ्म तथा एकाक्षरी मंत्र का पाठ करने में दाँत, नाक, जीभ सबका उपयोग होता है, जिससे हार्मोनल स्राव कम होता है तथा ग्रंथि स्राव को कम करके यह शब्द कई बीमारियों से रक्षा करके शरीर के सात चक्र (कुंडलिनी) को जागृत करता है।

"ह्रीं" बीज मन्त्र

यह शक्ति बीज अथवा माया बीज है। इसमें ह = शिव, र = प्रक्रति, ई = महामाया, नाद = विश्वमाता, बिंदु = दु:ख हर्ता। इस प्रकार इस माया बीज का तात्पर्य हुआ – शिवयुक्त विश्वमाता मेरे दु:खो का हरण करें।

"श्रीं" बीज मन्त्र

इसमें चार स्वर व्यंजन शामिल है। इसमें श = महालक्ष्मी, र = धन-ऐश्वर्य, ई = तुष्टि, अनुस्वार= दु:खहरण, नाद का तात्पर्य है, विश्वमाता। इस प्रकार 'श्रीं' बीज का अर्थ है – धन ऐश्वर्य-सम्पत्ति, तुष्टि-पुष्टि की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी मेरे दु:खों का नाश करें।

"ऐं" बीज मन्त्र

यह सरस्वती बीज है, इसमें ऐं = सरस्वती, अनुस्वार = दु:खहरण, इस प्रकार "ऐं" बीज का तात्पर्य हुआ – हे मां सरस्वती! मेरे दु:खों का अर्थात् अविद्या का नाश करें।

"क्रीं" बीज मन्त्र

इसमें चार स्वर व्यंजन शामिल है। इसमें क = काली, र = ब्रह्म, ई = कार महामाया, अनुस्वार = दु:खहरण, इस प्रकार 'क्रीं' बीज का अर्थ हुआ – ब्रह्म शक्ति सम्पन्न महामाया काली मेरे दु:खों का हरण करें।

"दूं" बीज मन्त्र

यह दूं दुर्गा बीज है, इसमें दो स्वर व्यंजन शामिल है। इसमें द = दुर्गा, ऊ = रक्षा, अनुस्वार = करना, इस बीज का अर्थ है – हे मां दुर्गे! आप मेरी रक्षा करो।

“ह्रौं” बीज मन्त्र

यह ह्रौं प्रसाद बीज है। इसमें ह्र= शिव, औ = सदाशिव, अनुस्वार = दु:खहरण, इस बीज का अर्थ है – शिव तथा सदाशिव कृपा कर मेरे दु:खों का हरण करें।

“क्लीं” बीज मन्त्र

यह काम बीज है। इसमें क = कृष्ण अथवा काम, ल = इंद्र, ई = तुष्टिभाव, अनुस्वार = सुखदाता, इस “क्लीं” बीज का अर्थ है – कामदेव रूप श्री कृष्ण भगवान मुझे सुख सौभाग्य और सुंदरता दें।

“गं” बीज मन्त्र

यह गणपति बीज है। इसमें ग = गणेश, अनुस्वार = दु:खहर्ता, जिसका अर्थ है – श्री गणेश मेरे विघ्नों को, दु:खों को दूर करें।

“हूँ” बीज मन्त्र

यह “हूँ” कूर्च बीज है। इसमें ह = शिव, ॐ= भैरव, अनुस्वार = दु:खहर्ता, इसका अर्थ है – हे! असुर संहारक शिव मेरे दु:खों का नाश करें।

“ग्लौं” बीज मन्त्र

इसमें ग = गणेश, ल = व्यापक रूप, औ = तेज, बिंदु = दु:खहरण, गणेश जी के “ग्लौं” बीज अर्थ है – व्यापक रूप विघ्नहर्ता गणेश अपने तेज से मेरे दु:खों का नाश करें।

“स्त्रीं” बीज मन्त्र

इसमें स = दुर्गा, त = तारण, र = मुक्ति, ई = महामाया, बिंदु = दु:खहर्ता, इस “स्त्रीं” बीज का अर्थ है – दुर्गा मुक्तिदाता, दु:खहर्ता, भवसागर-तारिणी महामाया मेरे दु:खों का नाश करें।

“क्ष्रौं” बीज मन्त्र

इसमें क्ष = नृसिंह, र = ब्रह्म, औ = ऊर्ध्वकेशी, बिंदु = दु:खहरण, यह “क्ष्रौं” नृसिंह बीज है। जिसका अर्थ है – ऊर्ध्वकेशी ब्रह्मस्वरुप नृसिंह भगवान मेरे दु:खों को दूर करें।

“वं” बीज मन्त्र

यह अमृत बीज है, इसमें व = अमृत, बिंदु = दु:खहर्ता, इस अमृत बीज मन्त्र का अर्थ है – हे अमृतस्वरुप सागर मेरे दु:खों को दूर करें।

इसी तरह निम्नलिखित कई बीज मन्त्र है जोकि अपने आप में मन्त्र स्वरुप है।

"शं" शंकर बीज
"फ्रौं" हनुमत् बीज
"क्रौं" काली बीज
"दं" विष्णु बीज
"हं" आकाश बीज
"यं" अग्नि बीज
"रं" जल बीज
"लं" पृथ्वी बीज
"ज्ञं" ज्ञान बीज
"भ्रं" भैरव बीज

अत: वर्णमाला का प्रत्येक शब्द अपने आप में मन्त्र है, जिसमें एक निश्चित अर्थ और शक्ति का समावेश है। जोकि निश्चित स्वरुप एवं शक्ति है। भगवान शंकर ने मन्त्र के बारे में कहा है –

ध्यानेन परमेशानि यद्रूपं समुपस्थितम्। तदेव परमेशानि मंत्रार्थ विद्धि पार्वती।।

अर्थात् जब साधक सहस्त्र चक्र में पहुंचकर ब्रह्मस्वरुप का ध्यान करते करते स्वयं मन्त्र स्वरुप या तादात्म्य रूप हो जाता है, उस समय जो गुंजन उसके ह्रदय स्थल में होता है, वही मंत्रार्थ है।